भुवनेश्वर में कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साईंसेज में जनजातीय समुदाय के छात्रों को संबोधन

नवम्बर 09, 2019

आज भुवनेश्वर में इस प्रतिष्ठित संस्थान कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साईंसेज में आप सबके बीच आना मेरे लिए हार्दिक प्रसन्नता का विषय है। ओडिशा का यह संस्थान देश भर में अपनी विशिष्ट शिक्षा प्रणाली व अन्य शैक्षिक व्यवस्थाओं के लिए जाना जाता है। आप सभी भाग्यशाली छात्र-छात्राएं जो आज यहां से अपनी शिक्षा पूरी करके जा रहे हैं, आप सभी बधाई के पात्र हैं। मैं आप सभी को आपके माता-पिता को हार्दिक बधाई देता हूं, उनका अभिनंदन करता हूं। मेरा विशेष अभिनंदन डॉ. अच्युत सामंत जी को भी है जो इस कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साईंसेज के संस्थापक हैं। उनकी दूरगामी सोच से उपजे इस प्रकल्प ने निश्चय ही बहुत-से छात्र-छात्राओं के जीवन को एक नई राह दी है।

आप सब जानते हैं कि शिक्षा एक ताकतवर हथियार है। किसी भी महान देश की नींव एक अच्छी शिक्षा प्रणाली के आधार पर रखी जाती है। हमारे देश में युगों-युगों से शिक्षा और शिक्षक का उच्चतम स्थान रहा है। वह चाहें गुरु द्रोणाचार्य या गुरु वशिष्ठ के गुरुकुल हों अथवा नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला जैसे विश्व प्रसिद्ध विश्वविद्यालय, हम ज्ञान नवोन्मेष और उद्यमिता में विश्व के अग्रणी रहे हैं। हमारे संस्कारों में गुरु शिष्य का एक बहुत विशेष संबंध रहा है।

गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागू पाए।
बलिहारि गुरु आपने गोविंद दियो बताए।।

एक शिक्षित व्यक्ति शिक्षा रूपी दीप लिए जीवन-यात्रा में निरंतर आगे बढ़ता है। आप हमारे देश के उन सौभाग्यशाली युवाओं में से हैं जिनको उच्च शिक्षण संस्थान में शिक्षा ग्रहण करने का अवसर मिला है।

शिक्षा को हमेशा महत्वपूर्ण लोकहित और सामाजिक दायित्व माना जाता है एवं शिक्षा का विकास से सीधा संबंध है।

शिक्षण संस्थान मानवीय क्षमताओं का विस्तार करते हैं। शिक्षा का उद्देश्य हमेशा एक ही रहा है। स्वामी विवेकानंद कहते हैं "'शिक्षा मनुष्य में पहले ही उपलब्ध पूर्णता की अभिव्यक्ति है।"

मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष तथा दैनिक जीवन की प्रत्येक क्रिया को सफल बनाने के उदेश्य का विशेष महत्व होता है। बिना उद्देश्य के हम जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल नहीं हो सकते। शिक्षा के क्षेत्र मे भी यही बात है।

शिक्षा ही एक ऐसा साधन है जो किसी उद्देश्य के अनुसार समाज की बदलती हुई आवश्यकताओं तथा आदर्शों को दृष्टि में रखते हुए बालक की मूल प्रवृत्तियों का विकास इस प्रकार से करती है कि व्यक्ति तथा समाज दोनों ही विकसित होते रहें। इस दृष्टि से नर्सरी, प्राइमरी, माध्यमिक तथा उच्च स्तरों एवं सामान्य व्यवसायिक एवं तकनीकी तथा प्रौढ़ आदि सभी प्रकार की शिक्षा के उदेश्य अलग-अलग और स्पष्ट होते हैं।

कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साईंसेज बहुत ही अद्भुत और नेक दृष्टि (Vision) पर चलकर कार्य कर रहा है। 1993 में 250 छात्रों से शुरू कर आज यह संख्या 30000 तक पहुंच गई है। इस यात्रा में यह संस्थान शिक्षा के साथ-साथ इन विद्यार्थियों के लिए रहने की व्यवस्था, इनके कौशल विकास, इनकी चिकित्सा सुविधाएं आदि मुहैया कराता रहा है। इस संस्थान के छात्र-छात्राएं कई राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर चुके हैं। एक व्यक्ति की सोच व समर्पण किस तरह से समाज को बदल सकता है, यह इंस्टीट्यूट इस बात का जीता-जागता उदाहरण है।

आज भारत में एक समावेशी शिक्षा नीति है। हमारे देश के संविधान में शिक्षा समबर्ती सूची में आती है, शिक्षा के अधिकार को मूल अधिकारों की श्रेणी में रखा गया है। जिसके अंतर्गत 6-14 वर्ष तक के बच्चों के लिए अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा अधिनियम लागू है। अनुच्छेद 29(2) के अंतर्गत शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश के समान अधिकार है। अनुच्छेद 30(1) व 30(2) के अंतर्गत अल्पसंख्यकों की शिक्षा की विशेष व्यवस्था है। आजादी के बाद से हमारे देश की साक्षरता में निरंतर बढ़ोत्तरी हुई है। वर्ष 1951 में हमारे देश की साक्षरता दर लगभग 18.33 प्रतिशत थी जो कि वर्ष 2011 में बढ़कर 64.06 प्रतिशत हो गई।

हमारे यहां शिक्षा में लैंगिक अंतराल की समस्या से निपटने के लिए हमेशा से प्रयास हुए हैं और आज बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ जैसी योजनाएं ज्यादा से ज्यादा बालिकाओं को शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित कर रही है। सही एवं उचित शिक्षा से ही हमारी बालिकाओं का उचित विकास होगा और वह एक सशक्त स्वाबलम्बी महिला बनेंगी। यही महिला सशक्तीकरण का उद्देश्य है। आप सब ने मलाला युसूफजई का नाम सुना होगा जिसने मात्र 11 वर्ष की उम्र में लड़कियों को शिक्षा के समान अवसर के लिए आवाज उठाई। हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि 'शिक्षित महिला अदम्य शक्ति का स्रोत है।' (Enlightened Women are a source of infinite strength). इस संस्थान में छात्र-छात्राओं की लगभग बराबर संख्या देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता है। इस परिप्रेक्ष्य में मैं यह कहना चाहूंगा कि जिन छात्राओं को यहां पढ़ने का अवसर मिला, वे पूर्ण निष्ठा से अपने जीवन में आगे बढ़ें और परिवार, समाज एवं देश के विकास के लिए अपना योगदान दें।

शिक्षा कोई समय के साथ बदलने वाली चीज नहीं है। प्रशिक्षण समय के साथ अवश्य बदलता है। नई तकनीकों के साथ प्रशिक्षण भी बदलता रहता है। परंतु शिक्षा हमेशा स्थिर रहती है। यदि सच बोलना चाहिए, तो यह हमेशा के लिए लागू होता है। ईमानदारी हरेक समय में अपेक्षित होती है। समाज और देश के हित में कार्य करना हरेक कालखंड में आवश्यक होता है। इसलिए शिक्षा के जो मापदंड, स्वरूप और नीतियां भारत के मनीषियों ने निर्धारित की थीं, वे आज से पांच हजार वर्ष पहले भी प्रासंगिक थीं और आज भी प्रासंगिक हैं। आवश्यकता है उन्हें पढ़-समझकर उनका समुचित उपयोग करने की।

अच्छी शिक्षा के लिए चार चीजें बहुत महत्वपूर्ण हैं, जिनमें पहली है- पहुंच (Access), दूसरी समता (Equity), तीसरी गुणवत्ता (Quality) और चौथी प्रासंगिकता (Relevance)।

शिक्षा ऐसी हो जो पूरे विश्व में उपयोग में लाई जा सके। शिक्षा के पाठ्यक्रम को समय, स्थानीय परिस्थितियों, संस्कृति एवं सामाजिक जीवनशैली के अनुकूल बनाया जाना चाहिए। इन सभी बातों का ध्यान रखते हुए इस संस्थान ने बदलते हुए समय में प्रोफेशनल एवं टेक्नीकल स्किल को अपनाया है। प्राथमिक शिक्षा से लेकर पी.एच.डी. तक की शिक्षा आप लोग यहां प्राप्त करते हैं।

प्यारे विद्यार्थियों, मुझे खुशी है कि आप इस संस्थान से अनुशासित होकर सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक गुणों को समेटे, जीवन में आगे बढ़ेंगे। आप सभी छात्र अब निश्चित ही आर्थिक स्वाबलम्बन की ओर जाएंगे। आप से आग्रह है कि आप सब लोग अपने घर परिवार की जिम्मेदारियों के साथ-साथ समाज और देश के प्रति भी अपनी जिम्मेदारियों को समझें।

भारतीय संस्कृति हृदय और बुद्धि दोनों में उदार भाव रखकर कर्म करने की है। आप सभी युवा विद्यार्थी हमारी संस्कृति के संवाहक हैं। हमारे देश के कर्णधार हैं।

आज बदलते भारत की गूंज दुनियाभर में हैं। **टेक्नोलॉजी के इस युग में डिजिटल इंडिया मिशन का उद्देश्य भारत को ज्ञान अर्थव्यवस्था में बदलकर तकनीकी तौर पर सशक्त, सक्षम समाज को तैयार करना है।** तकनीक हमेशा नवयुग में प्रवेश का माध्यम रही है। पेपर, प्रिंटिंग प्रेस, ब्लैक बोर्ड, पुस्तकें या फिर आज के स्मार्ट बोर्ड, मोबाईल, इंटरनेट सेवा का,नव क्रांति का आप सबको अपने हित में और देश के हित में सकारात्मक प्रयोग करना है।

एक समय था जब शिक्षा का अर्थ सरकारी नौकरी पाना होता था। अब समय अलग है। निजी क्षेत्र में ऐसे बहुत-से अवसर हैं। साथ ही उद्यमशीलता (entrepreneurship) के लिए कई अवसर हैं, सरकार इसको बढ़ावा देने के लिए कौशल भारत अभियान (Skill India campaign) के तहत, मेक इन इंडिया (Make in India) के तहत और कई माध्यमों से रियायती दरों पर ऋण के माध्यम से नवयुवकों को आर्थिक सहायता दे रही है ताकि वह अपना काम शुरू करके आर्थिक रूप से स्वाबलम्बी बनने के साथ-साथ और लोगों को भी रोजगार दे, रोजगार सृजन करे। आपके लिए संभावनाओं का पूरा आसमान है।

आपके पास शिक्षा रूपी पंख हैं। आप ऊंचा उठे और आगे बढ़ें। आप में इस बात की क्षमता है कि आप वर्तमान का विश्लेषण करे तथा भविष्य का पूर्वानुमान लगाकर उसके लिए योजना बनाएं और उसके लिए तैयार हों।

मेरे युवा मित्रो, शिक्षा मानव विकास का सबसे सशक्त माध्यम है। हमारे समाज और देश के समग्र विकास के लिए शिक्षा अनिवार्य है।

अंत में मैं एक बार पुनः आप सभी छात्र-छात्राओं को एवं आपके अभिभावकों को बधाई देता हूं एवं आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं। इसके साथ ही, मैं इस संस्थान के संस्थापक डॉ. अच्युत सामन्त एवं उनकी पूरी टीम का हृदय से अभिनंदन करता हूं। मैं आपके इस संस्थान की पूरी टीम को बधाई देता हूं। आपकी प्रतिबद्धता अनेक लोगों के लिए प्रेरणा है। आपके अथक प्रयासों से यह संस्थान दिनों-दिन प्रगति करता रहे। धन्यवाद।